पञ्चम अध्याय
खण्डकाव्य, मुक्तक तथा स्तोत्र

संस्कृत की बहुत-सी ऐसी पद्य-रचनाएँ हैं, जिन्हें महाकाव्य नहीं कहा जाता है, परन्तु उनमें काव्य के सामान्य गुण होते हैं । ऐसी रचनाओं को गीतिकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक, स्तोत्र इत्यादि कहा जाता है । इस प्रकार की रचनाएँ गेयात्मकता की प्रधानता के कारण गीतिकाव्य, जीवन के किसी एक पक्ष के चित्रण के कारण खण्डकाव्य, पूर्वापर-सम्बन्ध से मुक्त होने के कारण मुक्तक एवं स्तुति-सम्बन्धी पदों के कारण ***स्तोत्रकाव्य*** कहलाती हैं ।

खण्ड काव्य

खण्डकाव्य का कथानक छोटा होता है । इसमें हृदय के कोमल भावों को कवि अपनी अनुभूति एवं कल्पना से पूर्ण कर संगीतमयी भाषा में अभिव्यक्त करता है इसमें जीवन के किसी एक पक्ष का रोचक, वर्णन होता है । ऋतुसंहार एवं मेघदूत इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं । यह दो प्रकार का होता है प्रबन्धात्मक तथा मुक्तक ।

ऋतुसंहार

यह कालिदास की आदिम रचना है । इसमें छः सर्ग एवं ***144*** श्लोक हैं । कवि ने इसमें क्रमशः ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर और

वसन्त ऋतुओं का काव्यमय वर्णन किया है ।.इन ऋतुओं के वर्णन में कालिदास ने शृंगार भावना को प्रमुखता दी है । सर्वत्र नायक–नायिका के संवाद के रूप में ऋतुओं को उपस्थित किया गया है । ऋतु–परिवर्तन से ब्राह्य प्रकृति में नवीनता का संचार, तथा युवक–युवतियों में विविध प्रणय–क्रीड़ाओं और शृङ्गार की चेष्टाओं का उदय दिखाया गया है ।

कालिदास के उत्कृष्ट काव्यगुणों के अंकुर ऋतुसंहार में दिखाई पड़ते हैं । इसमें इन्होंने एक युवा कवि के रूप में रूपक एवं उपमा अलंकारों का प्रयोग किया है । संस्कृत साहित्य का यह एकमात्र काव्यग्रन्थ है, जिसमें षड् ऋतुओं का सांगोपाग वर्णन है ।

मेघदूत

यह महाकवि कालिदास की अपूर्व ख्याति–प्राप्त कृति है । यह प्रबन्धात्मक खण्डकाव्य है इसमें एक ऐसे यक्ष की विरह–व्यथा का वर्णन है, जिसे अपने स्वामी द्वारा एक वर्ष के लिए अपनी प्रियतमा से अलग कर दिया गया है। उसकी प्रिय पत्नी हिमालय–स्थित अलकापुरी में रहती है । यक्ष स्वयं मध्यभारत–स्थित रामगिरि में प्रवास कर रहा है । वर्षाकाल के आरम्भ में आकाश में मेघ को देखकर प्रिया–मिलन हेतु उसका मन व्याकुल हो उठता है। स्वामी के शाप–वश वह मिल नहीं सकता इसलिए वह मेघ को दूत बनाकर अपना संदेश प्रियतमा के पास भेजता है ।

मेघदूत दो खण्डों विभक्त है – पूर्वमेघ और उत्तरमेघ। पूर्वमेघ में रामगिरि से अलकापुरी तक के मेघ के मार्ग का मनोरम वर्णन है । इसमें कवि ने भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का रोचक चित्रण किया है । उज्जयिनी का वर्णन विस्तार से किया गया है उत्तरमेघ में अलकापुरी के वर्णन के प्रसंग में यक्ष के भवन और उसकी पत्नी का सुन्दर चित्र अंकित किया गया है । यक्ष इतना कामार्त है कि वह चेतन और अचेतन में भेद नहीं कर पाता है । अचेतन मेघ से वह चेतन की तरह व्यवहार करने का आग्रह करता है । वह मेघ से कहता है –तुम जब मेरी प्रिया के निवास स्थान के पास पहुँचोगे तो अपनी बिजली को जोर से चमकने न देना । मेरी पत्नी शायद स्वप्न देख रही होगी या मेरा ध्यान कर रही होगी, तो तुम्हारा गर्जन सुनकर जाग जायगी।

पूरा मेघदूत मन्दाकान्ता छन्द में निबद्ध है । इसमें विरह और प्रणय का अद्भुत चित्र खींचा गया है । इसमें आन्तर और बाह्य दोनों प्रकृतियों का सुन्दर समन्वय है । मेघदूत के आधार पर संस्कृत में दूतकाव्य–रचना की एक लम्बी परम्परा है । अनेक कवियों ने विभिन्न शताब्दियों में अनेक संदेशकाव्यों की रचना की है ।

घटकर्पर

कालिदास के समकालीन एवं राजा विक्रमादित्य के नवरत्नों में पठित घटकर्पर कवि ने घटकर्परकाव्य की रचना की । 22 पद्य के इस

काव्य में एक नवोढ़ा वधू मेघ के माध्यम से अपने दूरस्थ पति के पास संदेश भेजती है । इसमें यमक अलंकार का सुन्दर प्रयोग हुआ है । इस काव्य के पद्य में कवि ने यमक – प्रयोग के सम्बन्ध में प्रतिज्ञा की है कि जो कोई भी उन से अच्छा यमक का प्रयोग करेगा, उसके यहाँ वे घटकर्पर (खप्पर) में पानी भरेंगे । शायद इसी कारण कवि का नाम घटकर्पर पड़ गया और असली नाम विस्मृत हो गया । पद्य इस प्रकार है –

'आलम्ब्य वाम्बुतृषितः करकोशपेयं
भावानुरक्त–वनितासुरतैः शपेयम् ।
जीयेय येन कविना यमकैः परेण
तस्मै वहेयमुदकं घटकर्परेण ।।

इसकी रचना मेघदूत के अनुकरण पर हुई है। मेघदूत के अनुकरण पर लिखे गये प्रमुख संदेशकाव्य हैं –धोयी का *पवनदूत*, जम्बू कवि का *चन्द्रदूत*, जिनसेन का *पार्श्वाभ्युदय*, वामनभट्टबाण का *हंससंदेश* आदि । आधुनिक युग में भी कई संदेशकाव्य लिखे गये हैं ।

गीतगोविन्द

यह जयदेव कृत लोकप्रिय गीतिकाव्य है । जयदेव बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन की सभा में रहते थे । इसलिए इनका समय बारहवीं शती का पूर्वार्द्ध माना जाता है । ये कृष्णभक्त कवि थे। गीतगोविन्द में इन्होंने राधाकृष्ण के प्रेम का रोचक वर्णन किया है । बारह सर्गों की इस काव्य–

रचना में गीतों के द्वारा राधाकृष्ण की प्रणय लीलाओं की सुन्दर प्रस्तुति हुई है । इसके प्रत्येक अक्षर में संगीत है । मधुर,–कोमल–कान्त पदावली का तो यह भण्डार ही है । इसमें लम्बे समास रहने पर भी शैली में रमणीयता एवं प्रवाह विद्यमान है । उदाहरण के लिए निम्न पद्य द्रष्टव्य है –

'ललित –लवङ्गलता–परिशीलन–कोमलमलय–समीरे ।
मधुकर–निकरकरम्बित–कोकिल–कूजितकुञ्जकुटीरे ।।

गीतगोविन्द में काव्य का मौलिक रूप मिलता है । इसकी रसपेशल एवं कर्णप्रिय पदावली को सुनकर अल्पज्ञ भी भावविभोर हो जाता है । इस में प्रत्येक गीत के राग तथा ताल का प्रतिपादन किया गया है । यह संस्कृत का एक श्रेष्ठ गीतिकाव्य है । इसके अनुकरण पर अभिनवगीतगोविन्द, गीतराघव, गीतगंगाधर आदि अनेक गीतिकाव्यों की रचनाएँ हुई हैं ।

चौरपञ्चाशिका

कश्मीर–निवासी कवि बिल्हण ने ग्यारहवीं शती के उत्तरार्द्ध में चौरपञ्चाशिका नामक गीतिकाव्य की रचना की । इसमें किसी राजकुमारी से कवि के गुप्त प्रेम का वर्णन है इसलिए इस 50 पद्य वाले गीतिकाव्य का नाम चौरपञ्चाशिका' पड़ा है । इसकी रचना के सम्बन्ध में किंवदन्ती है कि किसी राजकुमारी से गुप्त प्रेम करने के कारण राजा ने कवि को प्राणदण्ड

दे दिया था । वध के लिए ले जाये जाते समय कवि ने अपने प्रेम की स्मृति मे 50 पद्यों की रचना की थी । इन पद्यों को सुनकर राजा ने इन्हें मृत्युदण्ड से मुक्त कर दिया और राजकुमारी से विवाह करने की अनुमति दे दी थी । इसका प्रत्येक श्लोक 'अद्यापि' से आरम्भ होता है । इसके सब श्लोक वसन्ततिलका छन्द में है । शृंगार रस–प्रधान इस काव्य की भाषा सरल एवं प्रवाहपूर्ण है। शैली सरस और मधुर है ।

आर्यासप्तशती

जयदेव के समकालीन गोवर्धनाचार्य ने कवि हाल के प्राकृत काव्य 'गाथासप्तशती' के अनुकरण पर *'आर्यासप्तशती'* की रचना की । यह सम्पूर्ण काव्य आर्या छन्द में लिखा गया है । इसमें कुल *700* श्लोक हैं । प्रेमी–प्रेमिकाओं की विविध प्रणय–लीलाओं का सरस चित्रण इसका वर्ण्य विषय है । इसमें अकारादि वर्णानुक्रम से पद्यों की रचना कर शृंगार के संयोग एवं वियोग दोनों पक्षों का प्रतिपादन किया गया है । कवि ने आर्या जैसे छोटे छन्द में विपुल भावों को भरकर गागर में सागर भरने का काम किया है। कवि के सुकुमार भाव की कल्पना की विलक्षर्णता निम्न पद्य में देखी जा सकती है –

"पिब मधुप वकुलकलिकां दूरे रसनाग्रमाघ्राय ।
अधरविलेपसमाप्ये मधुनि मुधा वदनमर्पयसि ।।

आर्यासप्तशती में श्लेष के चमत्कार के साथ कवि का भाषा–ज्ञान भी मनोरम रूप में व्यक्त हुआ है । इसकी भाषा सरल, सरस और चित्ताकर्षक है ।

मुक्तक

मुक्तक से तात्पर्य उस काव्य से है जिसका प्रत्येक श्लोक संदर्भ आदि बाह्य उपकरणों से मुक्त होकर स्वयं रसपेशल होता है । इसके एक ही पद्य में किसी विषय का सांगोपांग चित्रण होता है। रसभिव्यक्ति में इसका प्रत्येक पद्य अपने आप में स्वतन्त्र होता है । *नीतिशतक, अमरुकशतक* आदि इस कोटि के काव्य ग्रन्थ हैं ।

भर्तृहरि का शतकत्रय

भर्तृहरि का कवित्व जितना विख्यात है व्यक्तित्व उतना ही अज्ञात है । जनश्रुति के आधार पर वे एक राजा थे और विक्रमादित्य के बड़े भाई । पिङ्गला इनकी पत्नी थी, जिसके चरित्र को दूषित जानकर इन्होंने वैराग्य ले लिया था । इनका समय सातवीं शताब्दी माना जाता है इन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर लगभग सौ–सौ श्लोकों के तीन संग्रहों *शृंगारशतक, नीतिशतक* और *वैराग्यशतक* की रचना की । इन शतकों का प्रत्येक श्लोक अपने में परिपूर्ण है ।

नीतिशतक

इसमें कवि उन उदात्त गुणों के ग्रहण के प्रति आग्रही हैं जिनका परिशीलन कर मानव समाज के लिए परममंगल–साधक बन सकता है । यहाँ कवि ने विद्या, वीरता, सज्जनता आदि उदार गुणों का वर्णन करते हुए मूर्खता, लोभ, धन, दुर्जनता आदि की निन्दा की है। नीतिशतक के श्लोक समाज में बहुत प्रचलित हैं । इसके पद्य सूक्तियों से भरपूर एवं स्वाभाविकता संयुक्त हैं ।

शृंगारशतक

इसमें कवि ने रमणियों के मोहक सौंदर्य तथा पुरुषों को आकृष्ट करने के लिए उनके द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली विभिन्न भाव–भंगिमाओं से परिचय कराया है । इसके प्रत्येक पद्य में काम और विलास का रोचक वर्णन किया गया है । इस में कवि का उद्देश्य रमणी–सौंदर्य तथा उसकी मादकता को सर्वोच्च बताना नहीं अपितु उनके आकर्षण और सम्मोहन में निःसारता का बोध कराकर उसकी दुःखान्तक परिणति का सम्यक् ज्ञान कराना है ।

वैराग्यशतक

इसमें कवि ने सांसारिक वस्तुओं के प्रति प्रेम और उसके भोग को क्षणिक तथा सारहीन बताकर वैराग्य को ही स्थायी कल्याणकारी रूप में प्रतिपादित किया है एवं संतोष को परमसुख और वैराग्य को मोक्षका एकमात्र साधन माना है । इस में काव्य–प्रतिभा और दार्शनिकता का अपूर्व समन्वय है । भर्तृहरि संस्कृत में मुक्त गीतिकाव्य परम्परा के सफल कवि हैं। भाषा की सरलता के कारण इनके भाव पाठकों पर सीधा प्रभाव डालते हैं। अनेक छन्दों में रचित इस गीतिकाव्य में कवि ने विषय को रोचक बनाकर एवं अनुरूप उदाहरण देकर सुन्दर सूक्तियों से श्रोता को तत्काल आकृष्ट करने का सफल प्रयास किया है ।

अमरुकशतक

संस्कृत गीतिकाव्यों में अमरु अथवा अमरुक का ***अमरुकशतक*** अत्यन्त प्रख्यात है । इसमें प्रेम और शृंगार के भावों की अभिव्यक्ति अत्यधिक रोचक रूप में हुई है । यद्यपि यह शतक है परन्तु इसमें प्रायः डेढ़ सौ तक श्लोक मिलते हैं । इससे स्पष्ट है कि इस शतक में अन्य कवियों ने भी अपने श्लोक मिलाये होंगे । वामन (750ई.) ने अमरुकशतक के तीन श्लोकों को उद्धृत किया है । आनन्दवर्धन (850ई.) ने अपने ध्वन्यालोक में अमरुकशतक के विषय में लिखा है कि इसका प्रत्येक श्लोक

भावों की उत्कृष्टता के कारण अपने में पूर्ण काव्य है । अतः अमरुक का समय 700 ई॰ के आसपास माना जाता है ।

अमरुकशतक में शृंगार के सभी पक्षों का सरस चित्रण हुआ है । कहीं मानवती नायिका के अनुराग का चित्र है तो कहीं प्रियतम के लौटने पर उसके क्रोध के दूर होने का वर्णन है । समासों का अभाव एवं सुपरिचित शब्दों का प्रयोग इसके प्रति आकर्षण का प्रमुख कारण है । इस में शार्दूल–विक्रीडित छन्द का सर्वाधिक प्रयोग किया गया है ।

भामिनीविलास

यह पण्डितराज जगन्नाथ के अनेक सुन्दर श्लोकों का संग्रह है। अपने भामिनीविलास में पण्डितराज ने शृंगारपरक पद्यों को महत्व दिया है। इसमें चार विलास हैं। प्रास्ताविक, शृंगार, करुण और शान्त। इसके पद्य अत्यन्त सरस, सुन्दर एवं भावपूर्ण हैं। इसकी पदशय्या प्राञ्जल एवं विचार–धारा अभिनव हैं। इसका समय 17 वीं शताब्दी है।

स्तोत्रकाव्य

गीतिकाव्य के अन्तर्गत स्तोत्रकाव्य भी आते हैं। भक्ति–प्रधान गीतिकाव्यों को स्तोत्रकाव्य कहा जाता है। इसका उद्‌भव यजुर्वेद के रुद्राध्याय से माना जाता है। विभिन्न देवी–देवताओं, आचार्यों और तीर्थों की स्तुति में ये स्तोत्र लिखे गये हैं। इनका सस्वर पाठ भक्तों के हृदय में

आह्लाद उत्पन्न करता है। भारत में विभिन्न सम्प्रदायों के कवियों ने अपने–अपने सम्प्रदायों से सम्बद्ध स्तोत्रों की रचना की है। इनमें भक्त कवियों के भाव व्यक्त हुए हैं। पुष्पदन्त नामक शैव कवि ने शिव की स्तुति में शिखरिणी छन्द में *'शिव–महिम्नःस्तोत्र'* की रचना की। मयूर भट्ट ने *' सूर्यशतक'* नामक काव्य की रचना की जिसमें 'स्रग्धरा' छन्द की मधुरध्वनि अत्यन्त आकर्षक है। बाणभट्ट ने इसी ढाँचे पर चण्डीशतक लिखा।

जगद्गुरु शंकराचार्य ने अनेक स्तोत्रों की रचना की जिन में *'भजगोविन्दम्'* और *'सौंदर्यलहरी'* प्रसिद्ध हैं।

वैष्णव स्तोत्रों में केरल के राजा कुलशेखर (700 ई0) की *'मुकुन्दमाला',* यमुनाचार्य का ***स्तोत्ररत्न,*** लीलाशुक का *'कृष्णकर्णामृत'* सोमेश्वर का *'रामशतक'* और मध्वाचार्य का 'द्वादशस्तोत्र' प्रमुख हैं। पंडितराज जगन्नाथ की भी पाँच लहरियाँ–करुणालहरी, गंगालहरी आदि प्रसिद्ध हैं।

संस्कृत में नैतिक सूक्तियों के कई और संग्रह मिलते हैं। जैसे–राजनीतिसमुच्चय, चाणक्यनीतिदर्पण, नीतिसार, नीतिप्रदीप' आदि। दामोदरभट्ट (800 ई0) ने सांसारिक नीति–विषयक व्यंग्य–काव्य *'कुट्टनीमत* लिखा। क्षेमेन्द्र ने ***समयमातृका, नर्ममाला, कलाविलास*** आदि ग्रन्थों में हास्यव्यंग्यपूर्ण शैली में समकालीन जीवन का चित्र खींचा है।

संस्कृत में इस प्रकार की अनेक पद्य रचनाएँ प्राप्त होती है, जो

मानव को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती है। इनका अनुशीलन आज भी आनन्ददायक एवं ज्ञानवर्द्धक है।

अभ्यास

1. खण्डकाव्य किसे कहते हैं? उदाहरण के साथ वर्णन करें।
2. ऋतुसंहार के वर्ण्य विषय पर प्रकाश डालें?
3. मेघदूत का वर्ण्य विषय क्या है? स्पष्ट करें।
4. घटकर्पर कवि की प्रतिज्ञा क्या थी? उदाहरण के साथ लिखें।
5. गीतगोविन्द गीतिकाव्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। समीक्षा करें।
6. चौरपञ्चाशिका के नाम की सार्थकता स्पष्ट करें।
7. आर्यासप्तशती की विशेषता क्या है? विवेचन करें।
8. मुक्तक किसे कहते हैं? सोदाहरण स्पष्ट करें।
9. भर्तृहरि के शतकत्रय की विषय–वस्तु पर प्रकाश डालें।
10. स्तोत्र काव्य किसे कहते हैं? उदाहरण के साथ स्पष्ट करें।

वस्तुनिष्ठ–प्रश्न

1. (i) ऋतुसंहार के रचयिता .... हैं।

   (ii) मेघदूत के .... खण्ड है।

   (iii) घटकर्पर काव्य में .... पद्य हैं।

   (iv) जयदेव की रचना...................... है।

(v) भामिनीविलास .... में विभक्त है।

2. स्तम्भ 'क' को स्तम्भ 'ख' से सुमेल करें।

स्तम्भ 'क'	**स्तम्भ 'ख'**
(i) शंकराचार्य	आर्यासप्तशती
(ii) मयूरभट्ट	भजगोविन्दम्
(iii) बिल्हण	भामिनीविलास
(iv) गोवर्धनाचार्य	सूर्यशतक
(v) पण्डितराज जगन्नाथ	चौरपञ्चाशिका